SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड–19 और भारतीय ग्रामीण समाज

करन सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय छत्रसाल, महाविद्यालय पिछोर जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
करन सिंह, (Ph.D.), समाजशास्त्र विभाग, शासकीय छत्रसाल, महाविद्यालय पिछोर जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 21/01/2021
Plagiarism : 02% on 15/01/2021

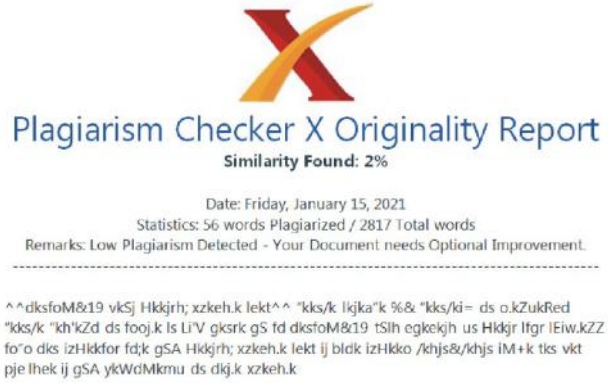
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Friday, January 15, 2021
Statistics: 56 words Plagiarized / 2817 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

^^dksfoM&19 vkSj Hkkjrh; xzkeh.k lekt^^ "kks/k lkjka"k %& "kks/ki= ds o.kZukRed "kks/k "kh'kZd ds fooj.k ls Li"V gksrk gS fd dksfoM&19 tSlh egkekjh us Hkkjr lfgr lEiw.kZZ fo"o dks izHkkfor fd;k gSA Hkkjrh; xzkeh.k lekt ij bldk izHkko /khjs&/khjs iM+k tks vkt pje lhek ij gSA ykWdMkmu ds dkj.k xzkeh.k

शोध सार

शोधपत्र के वर्णनात्मक शोध शीर्षक के विवरण से स्पष्ट होता है कि कोविड–19 जैसी महामारी ने भारत सहित सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। भारतीय ग्रामीण समाज पर इसका प्रभाव धीरे–धीरे पड़ा जो आज चरम सीमा पर है। लॉकडाउन के कारण ग्रामीण समाज के मजदूरों को अपनी रोजी–रोटी सहित कई समस्याओ का सामना करना पड़ा उनके शहरों के रोजगार छिन गए तथा अपने गांव वापसी में कई प्रवासी मजदूरों को मौत का सामना करना पड़ा। कई मजदूर आवगमन के साधनों के अभाव में कई दिनों की पैदल यात्रा तथा भूखे–प्यासे चलने को मजबूर हुये तब राज्यों द्वारा विशेष वाहनों से मजदूरों को उनके घर भेजने का कार्य प्रारम्भ किया गया। कोरोना का संक्रमण शहरों से प्रारम्भ हुआ जो आज गांव तक पहुँच चुका है। लाखों के संक्रमित होने तथा हजारों की मौत होने से देश के ग्रामीण समाज में भी भय का माहौल बन गया तथा इससे बचने के लिये शासन के दिशा–निर्देशानुसार ग्रामीण समाज में भी लॉकडाउन, मास्क, हैण्डवॉश, सैनिटाइजर तथा सामाजिक दूरी का पालन किया जाने लगा वहीं कई ग्रामीण लोग कोरोना के प्रभाव से भयभीत नहीं दिखे। कुल मिलाकर कोविड–19 के प्रभाव को ग्रामीण समाज पर देखा जाए तो इसने सामाजिक, धार्मिक, आार्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, विवाह, नातेदारी, सामाजिक सम्बंध इत्यादि नकारात्मक रूप से प्रभावित हुये हैं। ग्रामीण समाज में मेल–मिलाप, चर्चा, मनोरंजन, कृषि–व्यवसाय सभी प्रभावित हुये हैं हालांकि इस महामारी से एकजुटता के साथ लड़ने हेतु देश के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा मन की बात, ताली–थाली, दीपक जलाकर व जान है तो जहान है जैसी गतिविधियों से निरंतर प्रेरित करने का प्रयास किया है जो हमारी अनेकता में एकता की कल्पना को सिद्ध करते है।

मुख्य शब्द

कोविड–19, लॉकडाउन, ग्रामीण समाज, सामाजिक दूरी।

कोविड–19 और भारतीय ग्रामीण समाज

चीन के वुहान से निकले कोरोना वायरस ने वैश्विक मानव जाति को मृत्यु के द्वार पर खड़ा कर दिया है। विश्व में करोड़ों लोगों को इसका संक्रमण और लाखों लोगों की इस बीमारी से जान जा चुकी है। अभी यह बीमारी अपनी चरम सीमा पर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसकी भयावह को देखते हुये इसे महामारी घोषित किया है। कोविड–19 अर्थात् कोरोना वायरस से फैली महामारी ने सम्पूर्ण वैश्विक मानव जाति के धार्मिक, सामाजिक, आार्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, प्रशासनिक एवं मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन शैली को ही प्रभावित कर दिया है।

भारतीय सन्दर्भ में देखा जाए तो कोविड–19 से वर्ष के प्रारम्भ में ही संक्रमण आरम्भ हो गया था। देश में महामारी के कारण आवागमन के साधन अन्तर्राष्ट्रीय उड़ाने बन्द कर दी गई ताकि भारतीय जो अन्य देशों में फंसे थे उन्हे विशेष उडानों से देश में लाया जाए। लाखों मजदूरों के रोजगार बन्द होने से उन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ा तथा कुछ समय बाद उन्हें पैदल ही बड़े शहरों से अपने गांव आने को विवश होना पडा। मजदूरों ने कई सप्ताह की पैदल यात्रा गॉव के लिये की तथा कुछ समय बाद राज्यों की नींद खुली और प्रवासी मजदूरों के लिये विशेष आवागमन के साधन शुरू करना पड़ा। कई मजदूरों की मृत्यु तो यात्रा के दौरान ही हो गई और अन्ततः बडी कठिनाइयों के साथ प्रवासी मजदूर अपने गांव पहुंचे। भारत में देखा जाए तो मनुष्य मुख्यतः दो समुदायों में विभाजित है– नगरीय समाज और ग्रामीण समाज। नगरीय समाज जिसमें जनसंख्या घनत्व की अधिकता, शहरी चकाचौंध, पक्के आवास, नाली, सड़क, द्वितीयक समूह, अप्रत्यक्ष सबंध, संस्थानों की बहुलता के साथ एकल परिवहन एवं सामाजिक सम्बंधों में शिथिलता पाई जाती है। वहीं ग्रामीण समाज के परिवेश में प्राथमिक समूह, प्रत्यक्ष सम्बंध, प्राथमिक आर्थिक क्रियाएँ, धर्म एवं संस्कारों की प्रमुखता, कम जनसंख्या, संयुक्त परिवार, कृषि–पशुपालन इत्यादि विशिष्ट लक्षण पाए जाते हैं।

हमारे शोध का विषय 'कोविड–19' और भारतीय ग्रामीण समाज'' के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना है, इस महामारी से ग्रामीण जनों में क्या माहौल है उनकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, कृषि–व्यवसाय, धार्मिक क्रियाऐं, परिवार का वातावरण, सामाजिक सम्बंध तथा शिक्षा–स्वास्थ पर क्या प्रभाव पड़ा है, उपरोक्त बिन्दुओं में अनुसंधान किया गया। शोध विषय की समस्या का चयन करने के उपरांत अनुसंधानकर्ता द्वारा शोध प्रविधि का चयन किया गया जिसमें प्रश्नावली एवं दूरभाष द्वारा ग्रामीणों से विभिन्न प्रश्नों पर चर्चा कर जानकारी प्राप्त की गई तथा अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका, समाचार पत्र, न्यूज, सोशल मीडिया द्वारा भी स्थानीय ग्रामीण समाज के बारे मैं कोविड–19 के दौर में कई जानकारी प्राप्त हुई। शोधकर्ता द्वारा शोध विषय की वास्तविकता एवं वस्तुनिष्ठता को ध्यान में रखते हुये मध्यप्रदेश के शिवपुरी एवं ग्वालियर जिले के लगभग 20 ग्रामों के 125 लोगों को निदर्शन के रूप में चुना गया जिनमें अधिकांशतः साक्षर एवं शिक्षित थे। इनमें पुरूष एवं महिला, और सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग थे तथा इनकी आयु 18 से 45 वर्ष के बीच में थी। इनके पास मोबाइल भी थे जिससे इनसे सम्पर्क करने में ज्यादा समस्या नहीं आई। शोध विषय से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने के लिये इनसे सोशल मीडिया द्वारा प्रश्नावली के साथ सम्पर्क स्थापित किया गया अधिकांशतः लोग फेसबुक, व्हाट्सऐप का प्रयोग करते हैं। दूरभाष एवं सोशल मीडिया के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा कोरोना महामारी में ग्रामीण समाज के परिदृश्य को समझने हेतु ग्रामीण व्यवस्था के प्रमुख पक्षों यथा–ग्रामीण जनों की दिनचर्या, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, कृषि–व्यवसाय की गतिविधियों, शिक्षा, स्वास्ध तथा परिवार का वातावरण एवं सामाजिक सम्बंधों, नातेदारों, विवाह इत्यादि से सम्बंधित लगभग 30 प्रश्न शोधकर्ता द्वारा प्रत्येक चयनित इकाई से पूछकर जानकारी प्राप्त की गई जो हमारे शोध अध्ययन का आधार बनी।

सर्वप्रथम हम ग्रामीणजनों की दिनचर्या की बात करेगें जो कोविड–19 से आज पूर्णतः परिवर्तित हो गई है। शोधकर्ता द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त जानकारी के अनुसार महामारी के पहले ग्रामीण लोगों का आपस में

उठना–बैठना, चर्चा करना, तास खेलना, गपशप करना इत्यादि गांव की किसी भी गली या मोहल्ले में देखने को मिलता था। लोग सुबह उठकर पशु सम्बंधी कार्य करते थे तथा अपने खेतों पर एक चक्कर लगा लेते थे। उसके बाद सुबह का भोजन करते थे तथा कई ग्रामीण को प्रतिदिन मेहनत का कार्य करते थे और दोपहर का भोजन लेते थे। लेकिन महमारी के दौर में ग्रामीण लोगों की दिनचर्या ही बदल गई। शहरों से प्रारम्भ हुई महामारी ने गांव के लोगों में तनाव का माहौल बना दिया ग्रामीण लोग कोरोना के नाम से डरने लगे। कई लोग तो इससे बचने के लिये गांव के अन्य लोगों से सम्पर्क एवं उठना–बैठना बन्द कर दिया, लोगों में आपसी बातचीत, एक–दूसरे के घर जाना, वस्तुओं का आदान–प्रदान कम हो गया। घर में ही अधिक समय देना प्रारम्भ हो गया वहीं कई ग्रामीण इस महामारी से न भयभीत थे और न ही उन्हें किसी प्रकार का डर था, लेकिन ऐसे लोगों की संख्या कम थी। शोधकर्ता द्वारा गांव में भी लोगों को मास्क, सेनिटाइजर का उपयोग करते हुए देखा गया जिससे ये लोग परिचित ही नहीं थे। सभी ग्रामीण लॉकडाउन शब्द से भी इसी महामारी के दौरान परिचित हुये।

महामारी को ग्रामीण समाज पर समाजिक प्रभाव के रूप में देखा जाए तो इसके व्यापक प्रभाव हैं– कोरोना वायरस के शुरूआती चरण में ग्रामीण लोग इससे ज्यादा भयभीत नहीं थे। जब गांवों में इस महामारी ने दस्तक दी तथा कुछ संक्रमितों की इससे मौत हो गई, तब सम्पूर्ण ग्रामीणजनों में इस महामारी का व्यापक भय पैदा हो गया। लोगो ने बाजार में जाने से बन्द कर दिया तथा आवश्यक वस्तुओं–सेवाओं की प्राप्ति हेतु अन्य शहर, कस्बों, गांवों में व्यापक सुरक्षा के साथ जाने लगे तथा कई ग्रामीण लोगों ने तो इनसे महीनों तक दूरी बनाई रखी। इस महामारी से ग्रामीण समाज में भय पैदा हो गया। कई लोग तो इससे बचने के लिये जादू–टोना व अन्य प्रकार के पूजा–पाठ तथा अंधविश्वास का सहारा लेने लगे। अस्पृश्यता की समस्या के साथ गांव में अन्य प्रकार का आपसी भेदभाव या अस्पृश्यता की समस्या पैदा हो गई जिससे सभी जाति, धर्म के लोग प्रभावित हो रहे है। लोग अपनी ही जाति, धर्म, परिवार के लोगों से दूरी बनाने को मजबूर हो गए। विभिन्न प्रकार के सामाजिक समारोह, कार्यक्रमों में बंदिशों के लगने से तथा सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी ग्रामीण लोग अपने आपको अलग रखने लगे, वहीं कई ग्रामीणों पर इन प्रतिबंधों का कोई असर नहीं हुआ।

गॉव की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन एवं मजदूरी से संचालित होती है। सभी ग्रामीण लोगों का जुड़ाव कृषि–पशुपालन से रहता है। कोविड–19 के प्रभाव से सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ही चरमरा गई है। हाल ही में जीडीपी दर ऋणात्मक पहुँच चुकी है, इसी के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी संकट के दौर में है। मार्च–अप्रैल में लॉकडाउन के दौरान किसानों को अपना अनाज बेचने में भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिससे उन्हें रबी की फलस का उचित मूल्य नहीं मिला और उन्हें कम दामों पर ही फसल बेचना पड़ा। ग्रामीण क्षेत्र में छोटे उद्योग–धन्धे, कुटिल–लघु उद्योग एवं कारखाने बन्द एवं खराब स्थिति में होने से ग्रामीण मजदूर भी दो वक्त की रोटी के लिए अन्य विकल्प तलाशने लगे तथा सगे–सम्बंधियों से खाद्यान्य एवं ऋण लेकर अपनी जीवन यात्रा को चलाने के लिये मजबूर हुये। कुल मिलाकर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी कोविड–19 की चपेट में आ गई जिसको पटरी पर लाने में कई वर्ष भी लग सकते हैं।

ग्रामीण समाज धर्म एवं संस्कृति प्रधान होता है। ग्रामीण लोग आज भी तंत्र–मंत्र, पूजा–पाठ व अन्य धार्मिक क्रियाओं में रूचि रखते हैं। कोविड–19 जैसी महामारी से लड़ने के लिये भी कई ग्रामीण लोगों ने पूजा–पाठ का सहारा लिया। महामारी के प्रभाव से देश के सभी धार्मिक स्थलों पर ताला लगा दिया गया। पूजा–पाठ पर प्रतिबंध लगने से ग्रामीण समाज में भी भय का माहौल बन गया। लोगों में चर्चा होने लगी कि मन्दिर की मूर्तियों पर भी मास्क लगा हुआ है तो हमारा क्या होगा। जब भगवान भी इस महामारी से डरे हुये हैं तो हम ग्रामीण लोग कैसे लड़ेगें। महामारी के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी स्थगित हो गए, इससे कई संस्कार जैसे विवाह, जन्मोत्सव, तीज–त्योहार एवं अन्य संस्कारों पर प्रतिबंध लगने से भी ग्रामीण समाज की आस्था एवं जीवन शैली पर विपरीत प्रभाव पड़ा तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर पाबंन्दियाँ लगाना भी समय की प्रासंगिकता थी क्योंकि कोरोना वायरस ने शहर एवं गांव सभी जगह संक्रमण की चपेट में मनुष्यों को ले लिया। इससे बचने के लिये समय–समय पर शासन द्वारा दिशा निर्देश जारी किये गए जैसे मास्क पहनना, हेण्डवॉश, सेनिटाइजर, सामाजिक दूरी इत्यादि

को अपनाने में ग्रामीण लोगों को थोड़ा समय जरूर लगा। लेकिन देखा जाए तो अधिकांशतः ग्रामीण लोग कोरोना वायरस के कारण शहर एवं सामाजिक कार्यक्रमों में जाने से परहेज कर रहे हैं तथा मास्क, सेनिटाइजर और सामाजिक दूरी का पालन करते हुये भी कई ग्रामीणों को देखा गया जो एक अच्छा संकेत है।

कोरोना महामारी के कारण ग्रामीण समाज के लोगों का नातेदारी, विवाह जैसी रीतियों के प्रति भी विमुख देखा गया। ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि इस महामारी के कारण हमारे वैवाहिक कार्यक्रम जो पहले से ही निर्धारित थे वह लॉकडॉउन के कारण यथासमय या अभी तक नहीं हो सके और कुछ कार्यक्रम हुये भी तो उनमें सभी सगे–सम्बंधियों, मेहमानों की सहभागिता नहीं हो पाई। गॉवों में नातेदारी के सम्बंधों में दूरियाँ स्थापित हो गई, यहाँ तक कि लोगों ने होली, रक्षाबन्धन, मुहर्रम जैसे त्योहार भी खुलकर नहीं मना पाये। ग्रामीण क्षेत्र में परिवहन सुविधाओं का अभाव तथा बसों के न चलने से भी कई गरीब ग्रामीण जिनके पास स्वयं के वाहन नहीं है, उनका भी अपने नाते–रिश्तेदारों से मिलना नहीं हो पाया जिसे ग्रामीण समाज में सामाजिक अलगाव के रूप में कई चिंतकों द्वारा देखा गया है। गांव में किसी व्यक्ति को मौसमी बीमारियाँ या छोटी स्वास्थ्य समस्या दिखने से सम्पूर्ण ग्रामीण लोगों में उस व्यक्ति के प्रति अलगाव देखा गया तथा गांव में उसके प्रति नफरत का माहौल तत्काल बनता जाता है, और इन कारणों से वह व्यक्ति कोरोना न होने पर भी उसे संक्रमित मानकर समाज में अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाना उस व्यक्ति को तनाव व कुन्ठाग्रस्त की ओर ले जाता है। इससे वह व्यक्ति मानसिक एवं सामाजिक तनाव में जीने को मजबूर हो जाता है तथा उसके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कई ग्रामीण लोगों ने इस बात की पुष्टि की कि गांव में जब कोई शहर से आता है तो ऐसी अफवाहों से तुरन्त भय एवं तनाव का माहौल बन जाता हैं। बनिस्बत कोविड–19 में ग्रामीण समाज की जीवन शैली एवं सामाजिक वातावरण को कई प्रकार से प्रभावित करते हुये उसकी विवाह, नातेदारी की परम्पराओं को आंशिक रूप से परिवर्तित किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सभी के पास मोबाइल, तकनीक की पहुँच न होने तथा सूचना प्रौद्योगिकी के अभाव से यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति पर्याप्त जागरूकता नहीं देखी गई। कोविड–19 के प्रभाव से सम्पूर्ण समाज के स्वास्थ्य पर प्रभाव तो पड़ा ही है साथ ही बच्चों की शिक्षा भी पूर्णतः प्रभावित हुई है। वर्ष के प्रारम्भ में ही कोरोना की दस्तक से मार्च माह से देश के सभी स्कूल, कॉलेज, शैक्षणिक संस्थाऐं, कोचिंग इत्यादि में कक्षाऐं स्थगित करने से बच्चों के पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं हो पाये तथा उनकी परीक्षायें भी समय पर नहीं हो सकी। कई पाठ्यक्रमों की परीक्षाऐं तो हुई ही नहीं और उन बच्चों को राज्यों द्वारा सामान्य प्रमोशन की प्रक्रिया से उत्तीर्ण घोषित किया जाना निश्चित किया गया है। कक्षाऐं स्थगित होने पर पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिये ऑनलाइन पढ़ाई का विकल्प चुना गया जो बड़े बच्चों तथा शहरों में तो आंशिक रूप से सफल होता दिखाई दिया लेकिन ग्रामीण समाज के बच्चों का तकनीकि स्तर कम होने, संसाधनों की कमी, गरीब छात्रों पर मोबाइल न होना इत्यादि कारणों से ग्रामीण समाज के बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई के विकल्प का ज्यादा लाभ नहीं मिला। हालांकि शासन द्वारा विभिन्न टीवी चौनल, सोशल मीडिया, रेडियो तथा घर–घर पढ़ाई योजना से ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को अपनी पढ़ाई जारी रखने का घर बैठे लाभ मिला, लेकिन इन संसाधनों से समावेशी शिक्षा की बात मात्र आशिंक रूप से ही सही होती नजर आ रही है। नए सत्र में भी कोरोना महामारी के कारण शैक्षणिक संस्थाओं में कक्षाऐं देरी से लगना निश्चित है, लेकिन इसकी प्रतिपूर्ति करते हुये ऑनलाइन शिक्षा मुहैया कराना ही वर्तमान समय की प्रासंगिकता है।

कोविड–19 की विभिषिका एवं संक्रमण के खतरे से बचाव हेतु वैश्विक स्तर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र सरकार एवं महत्वपूर्ण संगठन, ऐजेंसियों ने समय–समय पर दिशा निर्देश जारी किये जिनमें मास्क, सेनिटाइजन, हैण्डवॉस तथा सामाजिक दूरी का पालन करना प्रमुख था। भारतीय समाज ने धीरे–धीरे इन उपायों को अपनाते हुये तथा ज्यादा समय घर पर ही रहना सीख लिया। ऐसा कहा जाए कि भारतीय समाज ने अपनी जीवन शैली में आमूल–चूल परिवर्तन कर लिये है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इन परिवर्तनों से ग्रामीण समाज भी अछूता नहीं रह पाया है, गांवो में जब शोधकर्ता द्वारा देखा गया कि छोटे–छोटे धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में कई ग्रामीण मास्क लगाते तथा सामाजिक दूरी का पालन करने पर जोर दे रहे थे तथा कई समझदार एवं शिक्षित लोगों का तर्क यह था कि इस समय ग्रामवासियों द्वारा किसी भी प्रकार के ऐसे

कार्यक्रमों से बचना चाहिए जिनमें ज्यादा लेगों के आने की सम्भावना होती है। कोविड–19 के दौरान किसानों को कृषि सम्बधी खाद्य, बीज, उर्वरक भी मिलने में समस्या आई तथा ग्रामीण गरीब मजदूरों की शहरों से घर वापसी जिससे रोजगार के संकट से पैदा हुए। आर्थिक तंगी तथा भुखमरी को कहीं हद तक शासन की खाद्यान्न वितरण योजना ने दो समय की रोटी की व्यवस्था की वहीं छोटे धन्धें वालों को कई योजनाओं के माध्यम से ऋण भी मुहैया कराने का प्रयास किया। शोधकर्ता द्वारा गांव के लोगों से जानकारी मिली कि शासन की विभिन्न योजनाओं से संकट के समय कुछ राहत तो मिली लेकिन इसमें भ्रष्टाचार, लापरवाही, वास्तविक हितग्राही की समस्या, माफियाओं का बोलबाला तथा घटिया खाद्यान्न प्रदाय करने जैसे समस्याओं ने शासन की पोल खोल दी, जिनका हाल ही में उदाहरण मध्यप्रदेश राज्य में कई चावल मिलों पर हुई कार्यवाही है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णनात्मक शोध के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कोरोना महामारी ने ग्रामीण समाज के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। महामारी की दस्तक देते ही भारतीय शहरों की सामाजिक संरचना प्रभावित होने लगी थी और महामारी की व्यापकता से ग्रामीण समाज भी इसकी चपेट में आ गया। अधिकांश ग्रामीणजन कोरोना से अत्यधिक भयभीत हो चुके है। ग्रामीण समाज के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, विवाह नातेदारी, शिक्षा–स्वास्थ्य इत्यादि सभी क्षेत्रों पर कोरोना का विपरीत प्राभाव पड़ा, समय–समय पर शासन–प्रशासन के दिशानिर्देश तथा प्रधानमंत्री के 'मन की बात' एवं ताली–थाली व दीपक जलाना जेसे महत्वपूर्ण गतिविधियों ने इस महामारी का एक जुटता के साथ मुकाबला करना सिखाया तथा सम्पूर्ण राज्य को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया जाना हमारी अनेकता में एकता की भावना को प्रकट करता है। देश में किसी भी बड़े संकट का सामना भी भारतीय मिलकर करते है, यह बात इस महामारी के दौरान सिद्ध होती है। हालांकि इन सब समावेशी प्रयासों से कोरोना की गति धिमी न होकर तेज गति से बढ़ती ही गई, किन्तु अन्ततः भारतीय समाज इस महामारी को पराजित कर ही देगा ऐसा मेरा विश्वास है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कोरोना महामारी से समाज पर जो विपरीत प्रभाव पड़े है तथा सामाजिक सम्बंध, सांस्कृतिक पर्यावरण एवं ग्रामीण समाज की विभिन्न संस्थाऐं इस महामारी में प्रभावित हुई है वे समय के चलते तथा भारतीय ग्रामीण समाज की स्थिति.सामान्य होने पर अपने आपको पूर्व स्थिति में स्थापित करने में निश्चित सफल होगा और वैश्विक समाज के सामने अहम उदाहरण प्रस्तुत करेगा कि भारतीय समाज स्वयं को समय अनुसार स्थापित कर लेता है।

संदर्भ सूची

1. scert.uk.gov.in/files/PRAKASH_-_GUIDELINES_FOR_MENTAL_WELLBEING _OF_ STUDENTS.pdf
2. www.bsesdelhi.com/documents/55701/1425409751/Samvad_Nov_2020_Hin.pdf/9bc72f95-9ec1-8bdf-3632-e799f3459df1?t=1603695984332
3. www.allresearchjournal.com/archives/2017/vol3issue7/PartB/3-7-11-609.pdf
4. drdo.gov.in/sites/default/files/samachar-document/SamacharAugust2020.pdf
5. www.dmrelief.rajasthan.gov.in/documents/alwar.doc
6. spc.cg.gov.in/pdf/activity/activity_Hi.pdf
7. www.naiindia.com/11-17%20%20March13.pdf
8. www.rmlau.ac.in/news/RMLDeptNews_270720043436.pdf
9. www.mdameerut.in/assets/pdf/GovernmentOrders/6-99.pdf
10. Daily News paper : India Today, Dainik Navbharat, Dainik Bhaskar.
11. Kurushetra.

****